उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

मानविकी विद्याशाखा

NAAC B++ Grade & Established in 2005 by an act of Uttarakhand Legislative Assembly

Recognized by UGC, DEB, listed in AIU

Programme Project Report (PPR)

कार्यक्रम परियोजना रिपोर्ट

Bachelor of Arts in Sanskrit

(बी.ए.संस्कृत ऑनर्स)

संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र

(Certificate in Sanskrit Language)

संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ विभाग

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139

तीनपानी बाईपास रोड, ट्रॉन्स पोर्ट नगर के पीछे

फोन नं. 05946- 261122, 261123, Fax No.- 05946-264232,

E-mail- info@uou.ac.in, http://uou.ac.in

(i) कार्यक्रम का लक्ष्य एवं उद्देश्य: (Programme's mission and objectives): भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय के निर्देर्शों के अनुसार उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, मानविकी विद्याशाखा के संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ विभाग के स्नातक संस्कृत कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को उन दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाना है, जहाँ परम्परागत (संस्थागत) शिक्षा व्यवस्था का प्राय: अभाव है। इसका उद्देश्य उन लोगों को शिक्षा से जोड़ना है जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित हैं या बीच में शिक्षा छोड़ चुके हैं। संस्कृत साहित्य में विद्यमान विविध ज्ञान-विज्ञान प्रदान करना उसके जीवन को नैतिक एवं सदाचार व सदाचारपूर्ण बनाना तथा विविध कलाकौशलों के प्रशिक्षण से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध बनाना तथा विविध कलाकौशल के प्रशिक्षण से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समर्थ बनाना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम में संस्कृतसाहित्य के पद्यकाव्य, गद्यकाव्य, नाटक, काव्यशास्त्र, व्याकरण, आयुर्वेद, राजनीति, राष्ट्रवाद, नीतिशास्त्र, मीमांसा, दर्शन, संस्कृतउपन्यास, मानवीय मूल्य, निरूक्त आदि विषय सम्मिलित किए गए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों का सर्वाङ्गीण विकास हो तथा वे एक योग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के विकास में सहयोगी बनें यही इसका मुख्य उद्देश्य है। विशेषत: संस्कृत के माध्यम से भाषा सम्वर्द्धन भी प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।

(ii) कार्यक्रम की प्रासंगिकता: (Relevance of the program with HEI's Mission and Goals): इस कार्यक्रम कि प्रासंगिकता दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों में विभिन्न प्रकार की भाषिक दक्षता उत्पन्न करना व परम्परा से परिचित कराना भी है। कुशलताओं आदि में विस्तार करना, गुणवत्ता में विस्तार करके रोजगारपरक बनाना व इसके साथ-साथ उन मानव संसाधनों के लिए भी यह पाठ्यक्रम उपयुक्त है जो रोजगार में रहने के साथ-साथ अपनी शिक्षा व कुशलताओं का विकास करना चाहते हैं। स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत भाषा के व्यापक अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार करना भी स्नातक संस्कृत की प्रासंगिकता है। साथ ही स्नातक संस्कृत करने वाले छात्र, अन्य प्रशिक्षण के पश्चात् हाई स्कूल (10^{th}) स्तर व इण्टरमीडिएट (12^{th}) की कक्षओं में अध्यापन भी कर सकें, यह भी इस कार्यक्रम का प्रयोजन है। मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पद्धति से इस कार्यक्रम को अपने अध्ययन द्वारा भी संचालित करने के कारण दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले सभी वर्गों को संस्कृत शिक्षा का अवसर प्राप्त होता है जो कतिपय कारणों से उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

(iii) शिक्षार्थियों के संभावित लक्ष्य एवं प्रकृति: (Nature of prospective target group of learners): बारहवीं कक्षा (12^{th}) उत्तीर्ण कोई भी इस कार्यक्रम में प्रवेश की पात्रता रखता है। प्रदेश में विशेष रूप से वे भी इसमें प्रतिभाग करते है जो हाईस्कूल (10^{th}) स्तर के शिक्षक बनने की आकांक्षा रखते हों। इस कार्यक्रम का लक्षित शिक्षार्थी समूह वह व्यक्ति है जो राज्य के दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहते है एवं विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन के द्वारा ज्ञान अर्जित करने एवं उसका विस्तार करने हेतु प्रयासरत हैं। स्नातक संस्कृत कार्यक्रम के द्वारा ना केवल दूरस्थ क्षेत्रों को केन्द्रित किया गया है बल्कि उन जनमानस को भी इसमें सम्मिलित किया गया है जो अधिक आयु हो जाने के कारण औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

(iv) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्नातक (संस्कृत) कार्यक्रम की उपयुक्तता या विशिष्ट कौशल / क्षमता प्राप्त करने के लिए उपयुक्तता के आधार – (Appropriateness of programme to be conducted in Open and Distance Learning and/or Online mode to acquire specific skills and competence):

- संस्कृत विषय की जानकारी हेतु प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों को अध्ययन की सुगमता प्रदान करना।
- सहज , सुबोध और अध्यापन शैली में लिखित सामग्री के द्वारा विना कक्षा शिक्षण के ही अधिगम कराया जाना।
- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- संस्कृतकाव्य, काव्यशास्त्र, व्याकरण आदि विभिन्न विषयों को पढ़ाने में सक्षम होंगे।
- दर्शनशास्त्रों के अध्ययन से छात्रों को तार्किक एवं तात्विक दृष्टि विकसीत होगी जिससे समाज से आनाचार, भष्टाचार, अन्धविश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन होगा।
- आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा से छात्रों का जीवन उत्कृष्ट तथा सदाचारमय होगा जिससे एक श्रेष्ट राष्ट एवं विश्व का निर्माण होगा। छात्र और शिक्षक के बीच सामग्री में ही संवाद की उपस्थिति से विषय को रूचिकर बनाना।

(v) निर्देशात्मक संरचना (Instructional Design): संस्कृत विषय में चतुर्वर्षीय स्नातक संस्कृत पाठ्यक्रम को खण्डों और इकाईयों में विभक्त किया गया है, जिसके लिए श्रेयांक (Credit) निश्चित किये गये हैं। दूरस्थ शिक्षा के मैनुअल के अनुरूप पाठक्रमों की अधिसंरचना की जाती है जो इस प्रकार है –

- पाठ्यक्रम का मात्रात्मक मूल्य
- विषय का संरचनागत प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
- संस्कृत में स्नातक के प्रथम ,द्वितीय और तृतीय वर्ष के कुल 6 पाठ्यक्रम 36 श्रेयांक के हैं।
- पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित है

Programme Name & Abbreviation	Program Code	Eligibility	Duration (Year)		SLM	Mode of Exam (Annual / Sem)	Year/ Sem	Details Of Fee (`)							
			Minimum	Maximum				Programme	Project/ Workshop	Exam	Practical	Viva-Voce	Miscellaneous	Degree Fee	Grand Total
BACHELOR OF ARTS - BA	(BA-21)	10+2 / Equivalent	3	6	Hindi	Annual	I	2500	-	1400	-	-	150		4000
							II	2500	-	1400	-	-	-		3900
							III	2500	-	1200	-	-	-	300	4000

	Course code and name					
Course Name	Course Code	Credit	Total Marks (Th./Assign.)	Course Name	Course Code	Credit	Total Marks (Th./Assign.)
B.A.I	BASL-101**नाटक ,अलंकार एवं छन्द**	**06**	**100 (70/30)**	BASL-102 **नीति काव्य व्याकरण एवं अनुवाद**			**06 100 (70/30)**
B.A.II	BASL-201 **पद्य , गद्य एवं व्याकरण**	**06**	**100 (70/30)**	BASL-202 **संस्कृत साहित्य का इतिहास एवं भारतीय संस्कृति**			**06 100 (70/30)**
B.A.III	BASL-301 **काव्य , दर्शन एवंव्याकरण**	**06**	**100 (70/30)**	BASL-302 **वेद एवं उपनिषद्**			**06 100 (70/30)**

(vi) प्रवेश एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया:(Procedure for admissions, curriculum transaction and evaluation): 10+2 उत्तीर्ण कोई भी छात्र स्नातक में प्रवेश लेते हुए स्नातक संस्कृत में प्रवेश का पात्र है। पाठ्यक्रमों में समय -समय पर संशोधन और परिवर्द्धन भी किये जाते हैं। वर्ष में दो बार ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन सत्रों में प्रवेश की प्रक्रिया संचालित की जा रही है। ऑनलाइन सुविधा से भी प्रवेश दिये जाते हैं। छात्रों को स्वनिर्मित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। सत्रीय कार्यों और उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन सक्षम परीक्षकों द्वारा कराये जाते हैं।

(vii) प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यवकता (Requirement of the laboratory support and Library Resources): विषय से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान व निराकरण हेतु पुस्तकालय में सन्दर्भ पुस्तकें उपलब्ध हैं। अध्ययन केंद्र में भी इस तरह की सुविधा छात्रों को उपलब्ध कराई जाती हैं।

(viii) कार्यक्रम की अनुमानित लागत और प्रावधान (Cost estimate of the programme and the provisions): कुल 6 प्रश्नपत्रों के लेखन ,सम्पादन , मुद्रण आदि की अनुमानित लागत रू0 10 लाख है।

(ix) गुणवत्ता नीति-तंत्र और कार्यक्रम के संभावित परिणाम: (Quality assurance mechanism and expected programme out comes): समय - समय पर विषय के सक्षम विशेषज्ञों के द्वरा पाठ्यक्रम को अद्यतन बनाने के लिए कार्य किया जाता है। साथ ही अध्ययन सामग्री के लेखन में कठिनता न आनें पाये , इस हेतु पूर्ण सावधानी का पालन किया जाता है। इकाई लेखकों के द्वारा विशिष्ट पाठ्य सामग्री का सरल भाषा में लेखन कराया जाता है। फलस्वरूप संस्कृत के अध्येताओं को विषय का स्तरीय ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा प्राप्त होती है। जिससे वे प्रतियोगी परीक्षाओं मे भी सफलता प्राप्त करने में सहायता पाते हैं।

पाठ्यक्रम (Syllabus)

प्रथम वर्ष - बी0ए0एस0एल –101

खण्ड - प्रथम अभिज्ञानशाकुन्तलम्

इकाई 1: नाट्य साहित्य का उद्भव एवं विकास कालिदास का जीवन वृत्त एवं उनकी काव्य प्रतिभा
इकाई 2: अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कथावस्तु, पात्रों का चरित्र चित्रण, ग्रन्थ का नाट्य, शास्त्रीय वैशिष्टय, पारिभाषिक शब्दावली
इकाई 3: अभिज्ञानशाकुन्तलम् का प्रथम अंक, मूल पाठ, अर्थ व्याख्या
इकाइ 4: अभिज्ञानशाकुन्तलम् का द्वितीय एवं तृतीय अंक मूल पाठ, अर्थ व्याख्या
इकाई 5: अभिज्ञानशाकन्तलम् का चतुर्थ अंक, मूल पाठ,अर्थ व्याख्या
इकाई 6 : अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पंचम अंक, मूल पाठ, अर्थ व्याख्या

खण्ड - द्वितीय : अलंकार, चन्द्रालोक पंचममयूख

इकाई 7: अलंकारों का सामान्य परिचय
इकाई 8: अनुप्रास, श्लेष, यमक (लक्षण एवं उदाहरण)
इकाई 9: अपह्नुति, व्यतिरेक, विभावना (लक्षण एवं उदाहरण)

खण्ड - तृतीय : अलंकार एवं छन्द

इकाई 10: उपमा,रूपक एवं उत्प्रेक्षा : विशेषोक्ति (लक्षण एवं उदाहरण)
इकाई11: अतिशयोक्ति, निदर्शना तुल्ययोगिता,अर्थापत्ति (लक्षण एवं उदाहरण)

इकाई 12: स्मृति, भ्रान्ति, सन्देह, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास (लक्षण एवं उदाहरण)

इकाइ 13: छन्दों का लक्षण एवं उदाहरण

प्रथम वर्ष - बी0ए0एस0एल –102

प्रथम खण्ड - नीतिशतकम्

इकाई 1: संस्कृत नीति साहित्य का परिचय

इकाई2: भर्तृहरि का जीवन वृत्त एवं नीति साहित्य को योगदान

इकाइ3: नीतिशतकम् श्लोक संख्या 1से 20 तक

इकाइ4: नीतिशतकम् श्लोक संख्या 21से 40 तक

इकाई 5 : नीतिशतकम् श्लोक संख्या 41से 60 तक

द्वितीय खण्ड - लघुसिद्धान्त कौमुदी, संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण

इकाई 6 : संज्ञा प्रकरण

इकाई 7: स्वर सन्धि

इकाइ 8: प्रकृतिभाव विधायक सूत्र, उदाहरण एवं व्याख्या

इकाइ 9: सन्धि प्रकरण के अन्तर्गत संज्ञा सूत्रों की व्याख्या

तृतीय खण्ड - अनुवाद- सामान्य नियम लकार विभक्ति, कारक एवं वाच्य

इकाई 10: सामान्य नियम - शब्दरूप

इकाई 11: लकार विभक्ति - धातु रूप

इकाई 12: कारक एवं वाच्य

इकाई 13: लघु गद्यांशो के अनुवाद पंचतन्त्र के गद्यांश संस्कृत से हिन्दी व हिन्दी से संस्कृत

चतुर्थ खण्ड - हितोपदेश

इकाई 14: नीति कथाओं का विकास एवं महत्त्व

इकाई15: हितोपदेश की कथाओं का सारांश

इकाइ16: चित्रग्रीव हिरण्यकथान्तर्गत वृद्धव्याघ्र लुब्ध विप्र कथा मृग श्रृगाल कथा

इकाइ 17: चित्रग्रीव हिरण्यक कथान्तर्गत जरद्गव विडाल कथा एवं मूषक परिव्राजक कथा

द्वितीय वर्ष - बी0ए0एस0एल –201

खण्ड एक - पद्य काव्य, किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग

इकाई 1 .भारवि - परिचय, समय, महाकाव्य के रूप में किरातार्जुनीयम् का मूल्यांकन

इकाई 2 . किरातातार्जुनीयम् , श्लोक संख्या 1 से 15 तक

इकाई 3 . किरातातार्जुनीयम् , श्लोक संख्या 16 से 30 तक

इकाई 4 .श्लोक संख्या 31 से 46 तक

इकाई 5 .प्रथम सर्ग की महत्वपूर्ण सूक्तियों की व्याख्या

खण्ड दो - पद्य काव्य ,कुमारसम्भवम् - प्रथम सर्ग

इकाई 1.कालिदास का परिचय, समय एवं महाकाव्य के रूप में कुमारसम्भवम् का मूल्यांकन

इकाई 2 . श्लोक संख्या 1 से 15 तक (मूल ,अन्वय, अर्थ - व्याख्या)

इकाई 3 . श्लोक संख्या 16 से 30 तक (मूल ,अन्वय, अर्थ - व्याख्या)
इकाई 4 . श्लोक संख्या 31 से 45 तक (मूल ,अन्वय, अर्थ - व्याख्या)
इकाई 5. श्लोक संख्या 46 से 60 तक (मूल ,अन्वय, अर्थ - व्याख्या)

खण्ड तीन - कादम्बरी (शुकनासोपदेश मात्र)

इकाई 1 .गद्य काव्य परम्परा , बाण की कादम्बरी का विहंगावलोकन,
शुकनासोपदेश का परिचय
इकाई 2 . गद्य भाग – एवं समतिक्रामत्सु .....मेदादोषं गुरूकरणम् तक व्याख्या
इकाई 3 .असुवर्णविरचनमग्राम्यं से चिन्तितापि वञ्चयति तक (व्याख्या)
इकाई 4 . एवंविधयापि ..... सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति तक (व्याख्या
इकाई 5. आत्मविडम्बनां ..... स्वभवनं आजगाम तक (व्याख्या

खण्ड चार - लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञा प्रकरण, अच् सन्धि)

इकाई 1 . लघुसिद्धान्तकौमुदी संज्ञा प्रकरण , प्रारम्भ से मुखनासिकावचनोऽनुनासिक: तक की व्याख्या
इकाई 2 . तुलयास्यप्रयत्नंसवर्णम् से सुप्तिड़न्तं पदम् तक
इकाई 3 .इकोयणचि से अलोऽन्त्यस्य तक
इकाई 4 . एचोऽयवायाव: से पूर्वत्राऽसिद्धम् सूत्रतक
इकाई 5 . वृद्धिरादैच् से एड़:पदान्तादति तक
इकाई 6 . सर्वत्र विभाषा गो: से ऋत्यक: सूत्र तक

द्वितीय वर्ष – बी0ए0एस0एल – 202

अनुक्रम

खण्ड एक - संस्कृत साहित्य का इतिहास

इकाई 1 – आदिकवि- परिचय, समय, रामायण का मूल्यांकन
इकाई 2 – व्यास-परिचय, समय, महाभारत का परिचय
इकाई 3 – कालिदास – परिचय - कृतित्व
इकाई 4 – कालिदास की काव्यकला, नाट्यकला एवम् उपमा कालिदासस्य
इकाई 5 - महाकवि माघ का जीवन परिचय,समय एवं कृतियों का महत्व

खण्ड दो - संस्कृत साहित्य का इतिहास

इकाई 1 –भारवि – व्यक्तित्व एवं कृत्तियों का विस्तृत परिचय
इकाई 2 – श्रीहर्ष – व्यक्तित्व एवं कृत्तियों का विस्तृत परिचय
इकाई 3 – जयदेव - व्यक्तित्व एवं कृत्तियों का विस्तृत परिचय
इकाई 4 –भवभूति का जीवन परिचय एवं कृत्तियॉ
इकाई 5- शूद्रक का जीवन परिचय एवं मृच्छकटिकम् की नाटकीय विशेषता

खण्ड तीन- संस्कृत साहित्य का इतिहास

इकाई 1 –विशाखदत्त के मुद्राराक्षस का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिचय
इकाई 2 – भर्तृहरि- जीवन परिचय एवं शतकत्रय का विस्तृत विवेचन
इकाई 3 –पं0 राज जगन्नाथ का विस्तृत परिचय एवम् साहित्यमें योगदान

इकाई 4 – गद्यकवि बाण की कादम्बरी का विस्तृत परिचय

इकाई 5- सुबन्धु एवं उनकी कृति वासवदत्ता का परिचय

इकाई 6- दण्डी काल निर्धारण , दशकुमार चरित एवं लक्षण ग्रन्थ का विस्तृत विवेचन

खण्ड चार- भारतीय संस्कृति

इकाई 1 – संस्कृति के विविध पक्ष एवम् विशेषताएं

इकाई 2 – पॉच महायज्ञों के स्वरूप ,अर्थ एवम् पुरूषार्थ चतुष्ट्य

इकाई 3 – वर्णोत्पत्ति ,आश्रम व्यवस्था की विस्तृत अवधारणा

इकाई 4 –संस्कार का अर्थ परिभाषा एवं सोलह संस्कारों का निरूपण

तृतीय वर्ष - बी0ए0एस0एल –301 काव्य, दर्शन एवं व्याकरण

खण्ड : एक - शिवराजविजय

इकाई 1 –अम्बिकादत्त व्यास का परिचय तथा संस्कृत गद्य साहित्य में शिवराजविजय

इकाई 2 – प्रथम नि:श्वास –विष्णोर्माया..... उपाविशच्च तक। (मूल, अर्थ, व्याख्या)

इकाई 3 – तस्मिन पूज्यमानै: ..... तूष्णीमवतस्थे तक (मूल, अर्थ, व्याख्या)

इकाई 4 – अथ समुनि ..... विरराम तक (मूल, अर्थ, व्याख्या)

इकाई 5- तदाकर्ण्य विविध ..... स्वकुटीरं प्रविवेश तक (मूल, अर्थ, व्याख्या)

खण्ड : दो-(श्रीमद्भगवद्गीता) द्वितीय एवं तृतीय अध्याय

इकाई 1 – श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय एवं महत्व

इकाई 2 - श्लोकसं0 1 से 24 तक मूल अन्वय, अर्थ ,व्याख्या

इकाई 3 – श्लोक सं0 25 से 49 तक मूल अन्वय, अर्थ , व्याख्या

इकाई 4 – श्लोक सं0 50 से 73 तक मूल अन्वय, अर्थ , व्याख्या

इकाई 5 – तृतीय अध्याय श्लोक सं0 1 से 20 तक मूल अन्वय, अर्थ , व्याख्या

इकाई 6- तृतीयअध्याय श्लोक सं0 21 से 43 तक मूल अन्वय, अर्थ , व्याख्या

खण्ड : तीन –व्याकरण- हल् एवं विसर्ग सन्धि

इकाई 1 –सूत्र–स्तो:श्चुनाश्चु: से शश्छोऽटि तक व्याख्या एवं प्रक्रिया अंश

इकाई 2 – मोऽनुस्वार: से .....नश्च तक व्याख्या एवं प्रक्रिया अंश

इकाई 3 – नश्चसूत्र से ..... पदान्तद्वा तक व्याख्या एवं प्रक्रिया अंश

इकाई 4 – विसर्ग सन्धि सम्पूर्ण व्याख्या एवं प्रक्रिया अंश

इकाई 5- शब्द रूप एवं धातु रूप – लट् ,लोट , लिड. ,लृट लड. लकारों में

खण्ड : चार-तर्क संग्रह

इकाई 1 –न्याय दर्शन का संक्षिप्त परिचय अन्नंभट्ट एवं उनका कर्तृत्व

इकाई 2 – तर्कसंग्रह मंगलाचरण से ..... शब्द लक्षण वर्णन तक

इकाई 3 – बुद्धिलक्षण से ..... पक्षधर्मता लक्षण तक

इकाई 4 – अनुमानद्वैविध्यसे..... बाधितलक्षण पर्यन्त

इकाई 5- उपमान खण्ड से लेकर ..... अभाव वर्णन पर्यन्त

तृतीय वर्ष - बी0ए0एस0एल –302 वेद एवं उपनिषद्

खण्ड एक - वैदिक सूक्त

इकाई 1 –अग्नि1/1 एवं विष्णु सूक्त 1 / 154 मूल ,व्याख्या

इकाई 2 –अक्षसूक्त 10/34 । (मूल, अर्थ, व्याख्या)

इकाई 3 –शिवसंकल्पसूक्त एवं सूर्य सूक्त 1/ 115 (मूल, अर्थ, व्याख्या)

इकाई 4 – इन्द्र सूक्त 2 / 12 (मूल, अर्थ, व्याख्या)

इकाई 5 - सूक्तों में पठित देवताओं के महत्व की विवेचना संक्षिप्त वैदिक व्याकरण

खण्ड दो-कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय)

इकाई 1 –उपनिषद् - प्रादुर्भाव, शिक्षाएं , कठोपनिषद् का विहंगावलोकन

इकाई 2 –प्रथम अध्याय ,प्रथम वल्ली मन्त्र संख्या 1 से 15 तक

(मूल ,अर्थ, अन्वय, व्याख्या ,व्याकरणादि)

इकाई 3 – प्रथम अध्याय ,प्रथम वल्ली मन्त्र संख्या 16 से 29 तक

(मूल ,अर्थ, अन्वय, व्याख्या ,व्याकरणादि)

इकाई 4 – प्रथम अध्याय ,द्वितीय वल्ली सम्पूर्ण

(मूल ,अर्थ, अन्वय, व्याख्या ,व्याकरणादि)

इकाई 5 - प्रथम अध्याय ,तृतीय वल्ली सम्पूर्ण

(मूल ,अर्थ, अन्वय, व्याख्या ,व्याकरणादि)

खण्ड तीन –वैदिक साहित्य का इतिहास

इकाई 1 –वैदिक संहिताएं , भाष्यकार वैदिक एव लौकिक संस्कृत में अन्तर

इकाई 2 – ऋग्वेद– परिचय, समय , आख्यान तथा ऋग्वेद कालीन धर्म, संस्कृति एवं समाज

इकाई 3 – यजुर्वेद- शाखाएं ,भेद, वर्ण्य विषय, धर्म एवम् समाज

इकाई 4 – सामवेद-अर्थ, स्वरूप, शाखाएं , वर्ण्य विषय

इकाई 5 - अथर्ववेद- अर्थ , स्वरूप, शाखाएं एवम् वर्ण्य -विषय

खण्ड चार-वेदाङ्ग उपनिषद् एवं आरण्यक

इकाई 1 - वेदांगों का परिचय एवं वर्ण्य विषय

इकाई 2 – आरण्यक-अर्थ, परिचय एवं वर्ण्य विषय

इकाई 3 –उपनिषद् – अर्थ, रचनाकाल, संख्या एवम् प्रमुख उपनिषदो का परिचय

इकाई 4 – उपनिषदों के प्रमुख प्रतिपाद्य

कार्यक्रम परियोजना रिपोर्ट (PPR)

(मानविकी विद्याशाखा)

प्रमाण-कार्यक्रम

संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र (Certificate in Sanskrit Language)

कार्यक्रम के लक्ष्य और उद्देश्य (Programmer's mission & objectives)- इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है, ''संस्कृत भाषा का संरक्षण एवं सम्वर्धन करना है। जिससे संस्कृत भाषा से इधर भाषा को पढ़ने वाले भी संस्कृत भाषा की के प्रति आकृष्ट हो सके''। यह कार्यक्रम उन लोगों को लाभ प्राप्त करता है जो संस्कृत भाषा को जानना चाहते हैं या संस्कृत भाषा को पढ़कर देश एवं विदेश में संस्कृत भाषा का प्रचार करना चाहते हैं।

कार्यक्रम की प्रासंगिकता(Relevance of the program with HEI's Mission and Goals)- संस्कृत भाषा समाज को विकसित एवं समुन्नता के साथ उस समाज में विचारों का आदान प्रदान करने का साधन है। संस्कृत भाषा की समृद्धि यह सूचित करती है कि उस देश और संस्कृति, सभ्यता, कला, संगीत, रहन-सहन, लेखन, रचनाकौशल, किस प्रकार का है। इसमें अध्यात्म, विज्ञान, दर्शन, मीमांसा, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, शिक्षा, सामुद्रिकशास्त्र, हस्तरेखा आदि विभिन्न शास्त्रों का वर्णन उपलब्ध होता है। जिसको जानने से हम उस भाषा के सौन्दर्य को जान सकते हैं, और एक सभ्य समाज की परिकल्पना कर सकते है।

लक्षित शिक्षार्थी समूह की प्रकृति (Nature of prospective target group of learners)- इस कार्यक्रम का लक्षित शिक्षार्थी समूह वह व्यक्ति है जो राज्य के दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं। साथ ही संस्कृत से अनुराग रखने वाले भी इस कार्यक्रम के लक्षित शिक्षार्थी हैं।

मुक्त एवमं दूरस्थ प्रणाली में विशिष्ट कौशल व योग्यता प्राप्त करने हेतु कार्यक्रम की उपयुक्ता (Appropriateness of programme to be conducted in Open and Distance Learning mode to acquire specific skills and competence)- शिक्षार्थी इस कार्यक्रम में योग्यता प्राप्त करने के उपरान्त समाज में संस्कृत भाषा की समृद्धि में अपना योगदान दे सकता है। भारतीय सभ्य समाज की इच्छा के लिए यह अति आवश्यक है कि संस्कृत भाषा के संरक्षण के लिए कार्य करे। संस्कृत भाषा के अध्ययन करने से शिक्षार्थी व्यवहारिक एवं नैतिक पक्ष का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है और वह एक कुशल संस्कारवान नागरिक बन कर समाज में अपनी सेवाऐं दे सकता है।

निर्देशात्मक संरचना (Instructional Design)- 6 माह के संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम को इकाईयों में विभक्त किया गया है, जिसके लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए 6 श्रेयांक (Credit) निश्चित किये गये हैं, अत: संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम 12 श्रेयांक (Credit) अर्जित करने होते हैं। संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम में दो प्रश्न-पत्र हैं- इस कार्यक्रम की न्यूनतम अवधि 6 माह और अधिकतम दो वर्ष है। संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम में विश्वविद्यालय स्तर पर स्वयं की अध्ययन सामग्री उपलब्ध है। अध्ययन सामग्री को छात्रों तक किताबों के माध्यम के साथ-साथ आनलाईन, ऑडियो-विडियो के माध्यम से भी उपलब्ध कराया जाता है।

Certificate in Sanskrit Language संस्कृत भाषा में प्रमाण पत्र **CSL-17**

Credits-12

PROGRAMME STRUCTURE			
Course Code	**Course Name**	**Credit**	**Total Marks**
CSL -101	सहज संस्कृत बोध - 1	06	100
CSL- 102	सहज संस्कृत बोध - 2	06	100

Programme Name (Code)	**Eligibility**	**Duration (In Yrs)**		**SLM**	**Of Exam (Annual/ Year/ Sem**		**Details Of Fee (`)**							
		Minimum	**Maximum**				**Programme**	**Project/ Lab Workshop**	**Exam**	**Practical**	**Viva-Voce**	**Miscellaneous**	**Degree Fee**	**Grand Total**
Certificate in Sanskrit Language (CSL-17)	10th	½	2	Hindi	Semester	I	1000		400			150	300	1850

पाठ्यक्रम (Syllabus)

संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र	
सहज संस्कृत बोधः CSL-101	**सहज संस्कृत बोधः CSL-102**
प्रथम खण्डः	**तृतीय खण्डः**
इकाईः- 1. संस्कृतवर्णमाला परिचयः- स्वरवर्णाः, व्यंजनवर्णाः संयुक्तवर्णाश्च वर्णोच्चारणाभ्यासः, लेखनाभ्यासश्च।	**इकाईः- 1. लकारपरिचयः, कालपरिचयश्च।**
इकाईः- 2. संख्यापरिचयः- संख्योच्चारण-लेखनाभ्यासः, संख्यापदानां लिंगभेदसंकेतश्च।	**इकाईः - 2. समासपरिचयः।**
इकाईः- 3. संज्ञा-सर्वनाम-विशेषण-हलन्तविसर्गपरिचयः शुद्धाशुद्धशब्दानां विचारश्च।	**इकाईः- 3. कारकपरिचयः।**
इकाईः - 4. गृहोपकरणनामावली, सम्बन्धवाचकशब्दावली, शरीरावयवनामावली, व्यवसायवाचकनामावली च।	**इकाईः- 4. सुभाषितानि नीतिवचनानि च।**
द्वितीय खण्डः	**चतुर्थ खण्डः**
इकाईः- 1. विभक्ति-पुरुष-लिंग-वचनपरिचयः (सप्रयोगः)	**इकाईः- 1. उपसर्ग-प्रत्ययपरिचयः प्रयोगश्च।**
इकाईः- 2. शब्दरूपपरिचयः, धातुरूपपरिचयः (सप्रयोगः)	**इकाईः- 2. अव्ययपरिचयः प्रयोगश्च।**
इकाईः- 3. सन्धिबोधः-स्वरव्यंजनस्वराः।	**इकाईः- 3. समयबोधः, दिशाबोधः, प्रश्नवाचकशब्दाश्च।**
इकाईः - 4. व्यवहारसंस्कृतम्, भाषाभ्यासश्च।	**इकाईः - 4. संस्कृतकथाः, संस्कृतगीतानि, हास्यकणिका च**

प्रवेश, पाठ्यक्रम आदान-प्रदान और मूल्यांकन की प्रक्रिया (Procedure for admissions, curriculum transaction and evaluation)- संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र कार्यक्रम के लिए वर्ष में दो बार (ग्रीष्म और शीत सत्र में) प्रवेश की प्रक्रिया है। इस प्रमाण-पत्र कार्यक्रम में प्रवेश के लिए हाई स्कूल उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इस प्रमाण-पत्र कार्यक्रम के लिए 1850 शुल्क लिया जाता है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के छात्रों के लिए शुल्क मांफी का प्रावधान है। प्रवेश, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन हेतु विभिन्न वैब-टूल्स का प्रयोग किया जाता है। शिक्षार्थी के मूल्यांकन हेतु अकादमिक सत्र के दौरान सत्रीय-कार्य और वार्षिक परीक्षा के द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

प्रयोगशाला और पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता (Requirement of the laboratory support and Library Resources)- विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षार्थियों के लिए के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था है, जिसमें विद्यार्थी सन्दर्भ पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के प्रत्येक अध्ययन-केन्द्र में भी पुस्तकालय की उपलब्धता है।

कार्यक्रम की अनुमानित लागत और प्रावधान (Cost estimate of the programme and the provisions)- इस प्रमाण-पत्र कार्यक्रम के अन्तर्गत इकाई निर्माण हेतु लेखन, सम्पादन और मुद्रण हेतु प्रत्येक इकाई में 8 हजार रूपये की लागत से लगभग 1 लाख 28 हजार रूपये की धनराशि प्रयोग में लाई गयी है।

गुणवत्ता नीति-तंत्र और कार्यक्रम के संभावित परिणाम(Quality assurance mechanism and expected programme outcomes)- कार्यक्रम की गुणवत्ता के लिए समय-समय पर विशेषज्ञ समिति (Expert committee) और अध्ययन बोर्ड (Board of Study) के द्वारा विषय-विशेषज्ञों की सलाह ली जाती है।